(3)

LESSON NO :

Pupil Teacher's Roll No. .... Name ....
Class .... Date ....
Subject .... Period ....
Topic .... Duration of Period ....

Unit - I
(पाठ और पठन)

पाठ और पठन का अर्थ :- पाठ और पठन के अर्थ को जानने से पहले हमें पाठ को जानना होगा। पाठ से तात्पर्य है एक किताब या अन्य किसी प्रकार प्रश्न लेख के मुद्रित से है यानि जो लिखा हुआ है। इसमें शब्दो या वर्णमाला के अक्षरों के रूप में जो तैयार होता है उसे पाठ कहते है। पाठ के लिए उचित विरामचिह्नों, व्याकरण का सही प्रयोग करते हुए वाक्य बनाए जाते है। वाक्यों के प्रयोग से लिखते हुए एक पाठ तैयार किया जाता है जो जानप्रद होता है बाइबिल या अन्य धार्मिक उपदेश में पाठ का प्रयोग किया जाता है जब एक पूर्ण रूप से एक पाठ तैयार किया जाता है तो उसको पढ़ा जाता है यानि उसको अलग अलग रूप से अलग - अलग व्यक्तियों के द्वारा उचित रूप से पढ़ा जाता है। पाठ को भी कई तरह से पढ़ा जाता है जैसे मौखिक रूप से उच्चारण करके, मौन रह कर केवल पढ़ना और कई बार में उसका व्याकरण को समझने के लिए भी हम उसको पढ़ते है।

पाठ के प्रकार :- पाठ के आधार पर इसको दो प्रकार में बांटा गया है। सामान्य आधार पर और व शैक्षिक आधार पर।

सामान्य आधार पर :- पाठ के प्रकार पाठक को पाठ को तैयार करने में और उनके संगठन करने में पाठक की मदद करता है इसके अंतर्गत, साहित्यिक ग्रंथ और गैर साहित्यिक ग्रंथ 2. कथा 3. ~~...~~ 4. तकनीकी पुस्त

के प्रकार आते हैं जो सामान्य आधार पर आते हैं।

1. (i) साहित्यिक ग्रंथ :- साहित्यिक ग्रंथ के अंतर्गत समकालीन और पारंपरिक ग्रंथ शामिल होते हैं। इस साहित्यिक ग्रंथ में भाषा का प्रयोग उच्च कोटि में, कल्पनाशील और आकर्षक तरीकों से मनोरंजन करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसमें भावनाओं और सांस्कृतिक की पहचान करने के लिए प्रतिबिंबित किया जाता है। इन ग्रंथों में कथा और गैर कथा शामिल होते हैं इसमें मिथ, कल्पनाशील कहानियाँ, परियों की कहानियाँ, सांस्कृतिक कहानी, रोमांटिक कहानी और कविता तथा नाटकीय भूमिका निभाने वाले साहित्य आते हैं।

(ii) गैर साहित्यिक ग्रंथ :- गैर साहित्यिक ग्रंथ के अंतर्गत समकालीन और पारंपरिक के साथ हर रोज जो दिन-चर्या या समकालीन घटनाएँ मुद्दों के ऊपर लिखा जाता है इसमें हर रोज प्रयोग, [व्यक्तिगत] इत्यादि भाषा का प्रयोग किया जाता है इसके अंतर्गत आलोचना, विश्लेषण और तर्क दिए जाते हैं इसके अंतर्गत निर्देश-पत्र, घटनाएँ और अवधारणाओं पर रिपोर्ट, मुद्दे, दिशा-निर्देश आते हैं। गैर साहित्यिक ग्रंथ के हर रोज की दिन-चर्या पत्र-पत्रिका, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ, विज्ञापनों के साथ-साथ लोकप्रिय उपन्यास और non-fiction शैलियों में पाए जाते हैं।

2. कथा लेखन :- आमतौर पर, कथा उपन्यास लेखन, जो कल्पनाशील घटनाओं या कहानियों जिन वास्तव में ऐसा नहीं हुआ है पर आधारित है के रूप में वर्णित किया जाता है। लेखन की अन्य शैली non-fiction जो वास्तविक तथ्यों पर आधारित है। यह आमतौर पर समाचार पत्र, निबंध, रिपोर्ट और अन्य जानकारी पूर्ण

लेखन के होते हैं हालांकि कुछ नॉन-फिक्शन वास्तव में एक कहानी है जो कथा लेखन में कल्पित करके लाया सकते हैं। कहानी वास्तविक लोगों और घटनाओं के साथ एक सत्य कहानी होता है और आत्मकथाएँ और जीवनी नॉन-फिक्शन कथा लेखन हैं (अभिव्यंजक)।

3. वर्णनात्मक:- कथा में एक कहानी बताता है जो भावनाओं पर भावना का उपयोग करता है जबकि इसके विपरीत वर्णनात्मक में शैक्षिक और उद्देश्यपूर्ण तथ्यों को उजागर करने की मौजूद है इसमें तथ्य आधारित एवं विश्वसनीय स्रोत के माध्यम से सत्य को उजागर करने के माध्यम से है। वर्णनात्मक पाठ पाठक को शिक्षित करने पर ध्यान देता है। वर्णनात्मक पाठ सूचना आधारित पाठ है इसमें पाठ्यपुस्तकें, समाचार लेख, निर्देश पुस्तिका, व्यंजन, यात्रा की किताबें ये सभी तरह के वर्णनात्मक हैं।

4. तकनीकी पाठ:- तकनीकी पाठ जो एक विशिष्ट उद्देश्य को समझाने का उद्देश्य है तकनीकी पाठ वर्णनात्मक पाठ-भाषा और संरचना के आधार पर बनता है इसमें पाठ में पाठ के मुद्दों को निपटने के लिए विशिष्ट वाक्य का प्रयोग किया जाता है बोलचाल की शर्तें, हास्य और महत्वपूर्ण बातों से बचा जाता है इसको व्याकरण नियमों और औपचारिक भाषा का तकनीकी पाठ में कोई जगह नहीं है।

5. प्रेरक पाठ:- प्रेरक पाठ में लेखक की राय और दृष्टिकोण वैधता को को समझाने की कोशिश करता है इस तकनीक में आपत्तिजनक सवाल, पुनरावृत्ति, भावनात्मक भाषा, अतिशयोक्ति का उपयोग शामिल होता है। लेखक को मुद्दा स्पष्ट रूप से उल्लेख करना होगा और स्पष्ट रूप से एक राय व्यक्त करनी होगी जो दर्शकों को समझ में आए और उससे प्रेरणा भी ले।

शिक्षा के आधार पर :-

1) वर्णनात्मक :- शैक्षिक आधार पर वर्णनात्मक पाठ्यक्रम सिद्धांत, निर्देशात्मक सिद्धांत और शिक्षार्थी की और सीखने की प्रकृति के आधार पर आधारित है। पाठ्यक्रम के वर्णनात्मक सिद्धांत में पाठ्यक्रम का लाभ सरकारी हो या गैर सरकारी। निर्देशात्मक सिद्धांत शिक्षा के तरीकों पर केन्द्रित है (शिक्षण पाठ्यक्रम के)। शिक्षार्थी और सीखने की प्रकृति के अन्तर्गत शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षा का समाजशास्त्र, शैक्षिक नृविज्ञान (नृविज्ञान एक उपक्षेत्र है जो व्यापक रूप से जाने STANDIER की अग्रणी काम के साथ जुड़ा हुआ है। शैक्षिक नृविज्ञान जातीय पहचान और जातीय परिवर्तन पर तेजी से ध्यान केन्द्रित हो गया है) वर्णनात्मक पाठ का उद्देश्य है जिससे किसी एक विशेष व्यक्ति स्थान या बात का पता चलता है

2) वैचारिक :- वैचारिक रूप से यह सफलता के सतत विकास के लिए शिक्षा और मानव सेवा की गुणवत्ता के लिए या कार्य करता है इसके माध्यम से यह शिक्षण, अनुसंधान, आर्थिक विकास, नेतृत्व और सेवा उनके भागीदारी आर्थिक करता है

3) ऐतिहासिक :- ऐतिहासिक पाठ का अपना महत्व है इसका अर्थ है विद्यालय तथा उच्च विद्यालय के छात्रों को इतिहास के बारे में जानकारी देना। इतिहास में किस तरह से बदलाव आया और कैसे परिवर्तन हुआ के बारे में जानकारी मिलती है विद्यार्थियों को न केवल अपने देश की बल्कि अन्य देश की भी जानकारी के साथ-साथ उनके सांस्कृतिक और वहाँ के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है यह विभिन्न आदर्शों, आन्दोलनों, सिक्कों, लिखित दस्तावेजों पर आधारित होता है

(8)

(7)

LESSON NO : ....

Pupil Teacher's Roll No. .... Name ....

Class .... Date ....

Subject .... Period ....

Topic .... Duration of Period ....

4) नीति दस्तावेज :- नीति दस्तावेज का शिक्षा के आधार पर बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। बिना नीति के शिक्षा का कार्यक्रम पूरा नहीं हो सकता या इसके बिना न तो कोई पाठ्यक्रम में संशोधन किया जाता है और न ही कोई परिवर्तन किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत पूर्व का के शिक्षक, विद्यार्थी और पाठ्यक्रम इससे जुड़े ही चुनता है इसके बिना कोई कार्य सम्भव नहीं है। शैक्षिक कार्य को NCERT, NCTE, NAAC आदि कई ऐसी संस्थाएं हैं जो इसका कार्यभार सम्भालती हैं।

5) कथा पाठ :- कथा पाठ कहानी को बताता है यह मनोरंजन के लिए भी होता है। यह काल्पनिक घटनाओं या कहानी पर आधारित के रूप में वर्णित किया जाता है। लेकिन को अन्य श्रेणी non-fiction जो वास्तविक तथ्यों पर आधारित है यह आमतौर पर समाचार पत्र निबंध रिपोर्ट और अन्य जानकारी पूर्ण लेखन को होते हैं आत्मकथा और जीवनी non-fiction के अंतर्गत आते हैं।

6) अर्धव्याख्यान :- कथा में कहानी को बताता है, जो आमतौर पर भावना को प्रयोग करता है जबकि इसके विपरीत अर्धव्याख्यान में शैक्षिक और उद्देश्यपूर्ण तथ्यों को प्रदान करने के लिए मौजूद है इसमें तथ्य आधारित एवं विश्वसनीय स्रोत के माध्यम से ज्ञान को उजागर किया जाता है इसमें वैज्ञानिक पुस्तकें, Journals, encyclopedias, textbo directions, newspaper and biographies आते हैं

7. नवशास्त्रीय पाठ :- नवशास्त्रीय शैली भाषा Classics से लिया गया है जिसका अर्थ है मिलान, लोगों का, शास्त्र और लोगों और संस्कृतियों का अवधारित अध्ययन है यह मनुष्य को

8

सामाजिक जीवन की समझ की ओर एक महत्वपूर्ण योगदान करने पर एक सौंदर्य प्रभाव डालता है। एक नृवंशविज्ञान उनकी मानवीय व्यवहार दिखाई और उनकी जटिल अर्थ संरचनाओं का वर्णन है। नृवंशविज्ञान एक गुणात्मक विश्लेषण, जो व्यक्तियों मूल्यों का आस्था करके व्यवहार विश्वासों और एक संस्कृति लोगों के समूह द्वारा साझा की गई भाषा के बारे में बताता है

Unit 1

Text and Reflection पाठ और प्रतिबिंब

2.

पाठ संरचना - शब्द 'पाठ संरचना' कैसे जानकारी एक मार्ग में आयोजित किया जाता है को संदर्भित करता है। एक पाठ की संरचना एक काम में यहां तक कि एक पैरा में कई बार बदल सकते हैं। छात्र अक्सर गद्य पढ़ने परीक्षण पर पाठ संरचनाओं की पहचान करने के लिए आवश्यक है, इसमें महत्वपूर्ण यह हो जाता है कि प्रत्येक संगठन के विभिन्न नमूने के लिए जोखिम दिया जाता है। संगठन के साथ आमतौर पर नमूना समझा जाएगा। पाठ संरचना में पठन के उद्देश्यों को ध्यान में रखा जाता है। पाठ संरचना में उसकी समीक्षा को भी समझा जाता है। पाठ संरचना में सभी प्रकार के मौकों को ध्यान में रखा जाता है।

भाषा -

विचारों की अभिव्यक्ति ही भाषा है। साधारण शब्दों में हम कह सकते हैं मनुष्यों अपने विचारों को प्रकट करने जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं उसी को भाषा कहते हैं। मनुष्य के पास यही एक सर्वोत्तम हथियार है जो वह अपने अधिकारों की मांग कर सकता है। भाषा द्वारा ही वह अपने छोटे संदेश भेज सकता है। मनुष्य भाषा द्वारा ही उसकी अपने समुदाय की पहचान होती है। भाषा से ही उसकी संस्कृति का संरक्षण होता है। दुनिया में 5,000 और 7,000 के बीच भाषाएं बोली जाती है। भाषा के बारे में किसी के पास भी सटीक अनुमान नहीं है। कुछ का कहना है कि भाषा भावनाओं से उत्पन्न है। भाषा अर्जित की जाती है। हम जितना अर्जित करना चाहे तो भाषा को उतना ही अर्जित किया जा सकता है। भाषा बच्चा अपने परिवार, वातावरण से सीखता है। ध्वनियों का विस्तृत रूप ही भाषा है। भाषा का लिखित रूप इसको स्थायी रखता है

Genre - यह शैलियो की सूचि के लिए है। सभी वर्गों में शैलियो का प्रयोग होता है चाहे वह साहित्य संगीत, कला या मनोरंजन के रूप में चाहे लिखित या फिर मौखिक रूप हो। शैलियो के लिए कुछ नियम बनाए जाते है या ये कहे कि उनको अलग अलग वर्गों में बांटा जाता है। समय के साथ-साथ नई-नई शैलियो के आविष्कार हो रहे हैं। पुराने रूपों को बंद किया जा रहा है, शैली के लिए निरपेक्ष वर्गीकरण प्रणाली के रूप में प्राचीन ग्रीक साहित्य, काव्य गद्य और प्रदर्शन विशिष्ट प्रकार की शैली है। शैली अप्रत्याशित कला के बाहर सार्वजनिक करन समझ में मदद करने के लिए एक गतिशील उपकरण बन गया। शैली का प्रयोग दृश्य कला, साहित्य, फिल्म, संगीत, भाषा विज्ञान, बयानबाजी, इतिहास, संस्कृति, आत्मदर्शन आदि

सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता -

दुनिया भर में, समाज विविधीकरण के पलायन से चलने वाली प्रक्रियाओं के माध्यम से और अधिक जटिल होते जा रहे है

जातिगत विविधता - पूरे विश्व में जातियो के आधार पर विविधता पाई जाती है भिन्न जातियो की वजह से लोगो के विचार भिन्न-भिन्न मिल रहे है। प्रत्येक देश का नागरिक अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मानता है। धर्मों के आधार पर भी अपने आप को श्रेष्ठ माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप-को धर्म से जोडकर अन्य व्यक्तियो से भिन्न समझता है। खान-पान के आधार पर भी अपने आपको श्रेष्ठ समझता है। परिधान के आधार पर भी भिन्नता दिखाई देती है। भाषा के आधार पर भी भिन्नता पाई जाती है। भौगोलिक स्थिति के आधार पर भी भिन्नता होती है। इस प्रकार से हम देखते है कि संस्कृति सामाजिक भिन्नता के कई कारण है।

LESSON NO :.....

Pupil Teacher's Roll No.....	Name.....
Class.....	Date.....
Subject.....	Period.....
Topic.....	Duration of Period.....

→ Pre-Reading — पूर्व पढ़ना — चयन की समीक्षा करने और मुख्य अवधारणाएं जो आप बच्चे को सीखाना चाहते है सबसे पहले उनकी पहचान से शुरु करवाना चाहिए। और साथ ही इन अवधारणाओं से सम्बंधित सम्भावित ज्ञान को बच्चों से भी पूछते रहना चाहिए। शिक्षक को तय करना चाहिए कि जो अवधारणाएं बच्चों के सामने प्रस्तुत की जा रही है वे सभी प्रासंगिक और बच्चों को आसानी से समझ आने वाली हो। पूर्व पढ़ना आप बच्चों को किसी फिल्म, चर्चा, कोई पढ़ने का काम या एक पाठ को पढ़ाकर शुरु कर सकते है या ऊपर दिखाई गई सामग्री के माध्यम से करवाई जा सकती है। शिक्षक अपनी कक्षा में इन सामग्रियों का प्रयोग करके पूर्व पढ़ना (Pre reading) रणनीति को आरम्भ करने का प्रयास करें।

पूर्व पढ़ना (Pre reading) बच्चों द्वारा भी शुरु करवाया जा सकता है। बच्चों से पहले एक पाठ का अवलोकन जोर-जोर से करवाना और उसके पश्चात् पाठ में आए शब्द और पाठ की पृष्ठभूमि का ज्ञान बच्चों को करवाना ताकि बच्चों ने जो कुछ खुद पढ़ा है उसका पूर्व ज्ञान बच्चों को हो सके। और इसके साथ-2 जिन बच्चों ने पाठ को सुना है उनको भी पाठ के शब्दों और पाठ की पृष्ठभूमि से सम्बंधित पूर्व ज्ञान हो सके।

→ पूर्व पढ़ना (Pre-reading) — पूर्व पढ़ना में अध्यापन, पारम्परिक

शब्दावली, शब्द अवधारणा आदि का पहले से पता होता है। उदाहरण के लिए- छात्रों को कुछ अवधारणाओं का पता हो सकता है परन्तु शब्दों को खोजना या ढूंढना पता नहीं होता है। इसी प्रकार पूर्व ज्ञान में बच्चों को कोई कहानी का पता हो सकता है परन्तु वह कहानी को शब्दों में कैसा व्यवस्थित किया जाएगा ये पता नहीं होता।

→ **बाद पढ़ना (Post Reading)** — बाद पढ़ने चरण का काम एकीकृत या विषय में से एक के ज्ञान के आधार पर सामग्री के संश्लेषण के लिए है। छात्रों के लिए सामग्री शिक्षक को खुद बनाने की जरूरत होती है। या शिक्षक को अपने आप ही बच्चों के लिए सामग्री को चुनना चाहिए। इसमें लेखन, कक्षा चर्चा, दृश्य निरूपण और शारीरिक प्रदर्शन को रोजगार के साधन की एक किस्म के माध्यम से हासिल किया जा सकता है।

बाद पढ़ना (Post Reading) — बाद पढ़ने चरण के लिए सबसे स्पष्ट और व्यापक रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। शिक्षक ~~को~~ जो भी सामग्री प्रदर्शित ~~करने~~ करता है उस सामग्री से सम्बन्धित सभी प्रकार के प्रश्नों के लिए अध्यापक को तैयार रहना चाहिए इस तरह के सवालों के जवाब में अच्छा है क्योंकि वे सीधे पढ़ने में अवधारणाओं से सम्बन्धित है और शब्दों में उनकी समझ डाल लेने के लिए छात्रों की आवश्यकता होती है।

क्योंकि शब्दों में या कुछ पाठ्यपुस्तकों में सवालों की संरचना बहुत जटिल है यह एक और अधिक उपयोगकर्ता

के अनुकूल स्तर पर आधारित है। अन्य समृद्ध साइट मॉड्यूल के कई बच्चे या विशिष्ट प्रयोजनों के लिए और अधिक जटिल संरचना को सरल बनाने के लिए अंग्रेजी व्याकरण की संरचना और प्रस्ताव के दिशा-निर्देशों की जटिलता पर चर्चा करना।

बाद पढ़ना (Post Reading) — इसमें कक्षा की गतिविधियां हैं कि उसके बाद पढ़ने (Post Reading) चरण में नियोजित किया जा सकता है। बाद पढ़ना चरण के अन्तर्गत अवधारणा, नक्शे, भूमिकाएं, प्रश्नोत्तरी, अनुसंधान मेले आदि गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है।

संकल्पना नक्शे को पढ़ने सामग्री का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और सामग्री की प्रकृति पर निर्भर करता है। अभिव्यक्ति की एक किस्म के लिए अनुमति देते हैं। कई छात्रों के लिए, निरूपण सीखने और अध्ययन उपकरण हैं।

खेल गतिविधियों के छात्रों के लिए अवधारणाएं बाहर कार्य करने की अनुमति प्रदान करता है उदाहरण स्वरूप- एक कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी वर्ग में, छात्रों को विभिन्न कम्प्यूटर घटकों के कार्यों के बारे में पढ़ाया गया है, शिक्षक छात्रों सीपीयू, मानीटर, माउस और प्रिंटर की भूमिका से बाहर कार्य करने के लिए कह सकते हैं।

प्रश्नोत्तरी बनाने के बाद एक अन्य छात्र गतिविधि है कि पढ़ने चरण में समझ को सुविधा के तौर पर प्रयोग कर सकते हैं।

Previews the text and Make Predictions

पूर्वावलोकन और भविष्यवाणी :-

एक पाठ को दर्ज करने के लिए शीर्षक, उपशीर्षक, दृश्यों और अन्य पाठ सुविधाओं का पूर्वावलोकन और विषय और पाठ के उद्देश्य के बारे में भविष्यवाणी करना है। पूर्वावलोकन और भविष्यवाणी की प्रक्रिया से प्रश्न में मदद मिलेगी और सटीक भविष्यवाणी करने की एक श्रृंखला के माध्यम से छात्रों का नेतृत्व करेंगे। इसकी सहायता से छात्रों को पूर्वज्ञान होगा और आगे के बारे में सोचने में मदद मिलेगी। पूर्व ज्ञान के उपयोग करने की क्षमता से छात्रों को एक महत्वपूर्ण सोचने-समझने (कल्पना) की शक्ति का विकास होता है

एक दूसरी भाषा को सीखने में भाषा प्रयोगशाला की भूमिका :-

भाषा संचार का एक माध्यम है। भाषा प्रयोगशाला समाधान और छात्र(?) की मांग के अनुसार किसी भी भाषा को सीखने के लिए आवश्यक है। भाषा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए इसमें Multimedia, Digital और computerised Lab का भी इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि Language Lab में computer भाषा शिक्षकों की सभी जरूरतों को पूरा करता है और कई शिक्षार्थियों के लिए भाषा को अधिक(?) देता है। भाषा प्रयोगशाला में Audio-Visual डिवाइसें भाषा को सीखने की आधुनिक तकनीक है। भाषा प्रयोगशाला का पहली बार उपयोग जेनोवल(?) विश्वविद्यालय में किया गया था। इस तरह से भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग तेजी से होने लगा क्योंकि इस शिक्षा में काफी परिवर्तन हुआ और नई तकनीकों की वजह से शिक्षा जगत में क्रांति आ गई जिससे

अन्य भाषा को सीखना और भी सरल हो गया। भारत बहुसंस्कृति प्रधान देश है अतः यहाँ अंग्रेजी भाषा और अन्य भाषा में दक्षता हासिल करना भाषा प्रयोग-शाला के द्वारा आसान हो गया है। भाषा प्रयोगशाला के बहुत लाभ हैं जैसे Audio-Visual के माध्यम विभिन्न उच्चारण स्पष्ट रूप छात्रों को समझा सकता है और कदम-कदम पर उनका मार्गदर्शन कर सकता है। भाषा लैब छात्रों के मन में आ रहे अलग-अलग विचारों को भाषा के द्वारा निर्मित करना सिखाती है। पारम्परिक कक्षा से प्रयोगशाला का वातावरण अलग होता है। इसमें पाठ को Audio-Visual की सहायता से संचालित किया जाता है। इसमें बच्चों छात्रों को परेशान किए बिना बल्कि दूर से प्रत्येक छात्रसमूह की निगरानी में मार्गदर्शन आसानी से किया जा सकता है इसलिए भाषा प्रयोगशाला अपना ही लाभ है।

Unit - 2

Communicative Readers → संवाद करने के लिए सबसे अधिक विदेशी भाषा सीखने का प्राथमिक लक्ष्य है। बालक के रूप में चार मौखिक भाषा कौशल (सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने) की आवश्यकता पड़ती है। Communicative Reader " शिक्षा की एक इकाई शुरू करने की मदद करने के लिए एक सकारात्मक की व्याख्या, छात्रों को प्रेरित करने के लिए और साहित्य की सराहना करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। पाठक को पाठ के लिए सार्वजनिक भाषा का प्रयोग करना है और आवाज पर ध्यान केंद्रित कर और हाव - भाव का प्रयोग करते हुए छात्रों के लिए शिक्षक अभिभावक के द्वारा वातावरण में जोड़ने के लिए पूरा ध्यान दिया जाता है। संवाद करने के लिए भाषा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिसमें व्यक्ति को शब्दकोष और भाषा की प्रणाली का सही रूप से ज्ञान होता है वही भाषा का उचित प्रयोग कर सकता है। संवाद जो भाषा के द्वारा किए जाते हैं वह दूसरे के समझ निर्धारित करना सीखते हैं। इस तरह से भाषा के द्वारा संवाद का उद्देश्य पूर्ण रूप से होता है।

व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से संवाद! - संवाद व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से हो सकता है। व्यक्तिगत रूप से संवाद में बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि इसमें ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाता है जिससे बालकों व्यक्तिगत रूप से सिखाने समझने का सकें। व्यक्तिगत रूप से कुछ पढ़ने - लिखने, प्रश्न हल करने, पढ़ाई

गई बातों को समझने आदि के आधार पर दूसरों से
कही जाती होती है इसलिए संवाद करने वाले को
भाषा के प्रयोग अभिव्यक्ति इस तरह से की
जाए जिससे कि उसको व्यक्तिगत रूप से समझ
आ जाए भाषा और स्पष्ट रूप का प्रयोग होना
चाहिए जिससे श्रोता समझ सके। अगर भाषा का
स्पष्ट रूप से प्रयोग नहीं किया जाएगा तो संवाद
पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाएगा। सामूहिक रूप से
संवाद छात्र केन्द्रित होता है और सारा मौन सामूहिक
चर्चा क्रिया पर आधारित है इस प्रणाली में छात्रों को
वार्ता-परिचर्चा करने में सहायता मिलती है
सामूहिक रूप से एक-दूसरे में सहयोग की
भावना का विकास होता है यह एक-पक्षीय
संवाद करने वाले पर आधारित नहीं है इसमें
सुनने वाला भी पूर्ण रूप से भागीदारी होता है
इसमें आपस में विचार-विमर्श और तर्क
वितर्क करने में सहायता मिलती है जिससे एक
उपयुक्त निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। संवाद के
अन्त में कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं जिससे व्यक्तिगत
रूप से तो वह अपने सोच-समझ कर विचार
प्रस्तुत करता है और इसमें अपनी समझ का
विकास होता है जिससे वह दूसरों के सामने अपनी
भावनाओं अभिव्यक्ति कर सकता है। लेकिन सामूहिक
रूप में समूह के अन्दर से कोई भी विचार-विमर्श
करके अपने विचार प्रकट सकता है सामूहिक के
अन्दर वह एक-दूसरे के ऊपर निर्भर होते हैं
और सहयोग की भावना से अपने विचार देते हैं

LESSON NO :.....

Pupil Teacher's Roll No..... Name.....

Class..... Date.....

Subject..... Period.....

Topic..... Duration of Period.....

Unit-2

A. Expressive Reflections:-

(a) Reflective writing :- चिंतनशील लेखन एक अभ्यास है जिसमें लेखक किसी वास्तविक या काल्पनिक दृश्य, घटना, बातचीत, समस्या या विचार का वर्णन करते समय अपने वास्तविक जीवन की घटनाओं, अपनी भावनाओं स्थितियों, विचारों या अनुभवों की छाप लेखन पर छोड़ता है।

इस प्रकार चिंतनशील लेखन केवल वर्णात्मक लेखन ही नहीं है। लेखक केवल प्रत्यक्ष वर्णन ही नहीं करता अपितु वह पुनः पूरी घटना का अवलोकन करते हुए पूर्ण घटना का विस्तार से वर्णन भावनाओं सहित करता है। जिससे संपूर्ण अर्थ प्रतिबिंबित हो तथा जाँच हो कि क्या सही घटित हुआ है या क्या और सीखने की आवश्यकता है और क्या जीवन से संबंधित है।

(b) Critical appreciation of the text :-

Note taking :- नोट लेना किसी अन्य स्त्रोत या माध्यम से जानकारी इकट्ठा या रिकार्ड करने की प्रथा है। नोट लेने से लेखक जानकारी का सार रिकार्ड कर लेता है तथा उसका मस्तिष्क सभी जानकारियों को याद रखने से मुक्त रहता है। नोट आमतौर पर किसी क्षणिक स्त्रोत जैसे कि किसी बैठक के दौरान मौखिक चर्चा, या एक व्याख्यान के दौरान तैयार किए जाते हैं नोट लेना आत्म-अनुशासन का एक प्रकार है।

नोट लेने के प्रकार :- माध्यम (कागज, कंप्यूटर) के बावजूद मोटे तौर पर नोट लेने की दो विधियों में विभाजित किया जा सकता है।

1. रेखिक विधि
2. गैर रेखीय विधि

रेखिक नोट लेना :- रेखिक नोट विधि का सामान्य तरीका बाह्य रेखांकन है। इस प्रकार की रूप रेखा में पेज पर आगे बढ़ते हुए शीर्षकों और बुलेट तथा नम्बर का इस्तेमाल करते हैं। इस प्रणाली में विभिन्न स्तरों को दर्शाने के लिए अरबी अंकों, शीर्षकों और रोमन अंकों का प्रयोग करते हैं। जैसे

1. मुख्य विषय (प्रथम)
   (i) उपविषय (अ)
   (ii) उपविषय (ब)
      (a) उपविषय (क)
2. मुख्य विषय (द्वितीय)
   (i) उपविषय (A)
   (ii) उपविषय (B)

गैर रेखिय नोट विधि :- गैर रेखिय विधि से नोट लेने के कई तरीके हैं, जैसे :- क्लस्टरिंग, संकल्पना मानचित्रण, कॉर्नेल प्रणाली, आइडिया मानचित्रण, आउटपुट स्लिप, ज्ञान नक्शे, मन मानचित्रण, इतिहास आरेख, पिरामिड सिद्धांत, सिमेंटिक नेटवर्क और SMART WISDOM आदि।

LESSON NO : ....

Pupil Teacher's Roll No .... Name ....

Class .... Date ....

Subject .... Period ....

Topic .... Duration of Period ....

Critically reviewing the text :- एक महत्वपूर्ण समीक्षा (कभी कभी आलोचना, महत्वपूर्ण कमेंटरी, गंभीर मूल्यांकन या महत्वपूर्ण विश्लेषण कहा जाता है) किसी पाठ पर एक महत्वपूर्ण कमेंट्री या महत्वपूर्ण मूल्यांकन होता है। आप महत्वपूर्ण समीक्षा को स्वयं में एक संपूर्ण अभ्यास या किसी अनुसंधान का हिस्सा और किसी साहित्य की समीक्षा की तैयारी के रूप में ले सकते हैं।

Critical review का अर्थ विशेषरूप से नकारात्मक आलोचना करने से नहीं है। किसी पाठ की critical समीक्षा से मतलब उसका न्याय संगत मूल्यांकन से है। मूल्यांकन शक्तियों और पाठ की कमजोरियों का आकलन है। आकलन अनुसंधान लेख के मामले में विशिष्ट मानदंडों से सम्बंधित होना चाहिए। प्रत्येक अनुभाग के उद्देश्य को समझने के लिए हर प्रकार के बारे में पता होना चाहिए। इसके लिए सबूत की भी जरूरत होती है। इसको कायल बनाने के लिए पहले अनुसंधान लेख के लिए आपने मूल्य जाँच कर सकते हैं।

PRACTICAL MATERIAL

EPC – I

(D)

INSTRUCTION (निर्देश) : →

ये PRACTICAL एक SPECIMAN COPY है इसको देखकर आप अपनी PRACTICAL बनाने में सहायता ले सकते हैं। इसकी COPY न करें बल्कि TOPIC से RELATED आप अपनी समझ के अनुसार अपनी PRACTICAL बनाएं।

Unit 1

1. Text and Reading

Types of Texts:

General: Literary or non-literary; Narrative, expository, technical & persuasive.

Education: Descriptive, conceptual, historical, policy documents, narrative texts, expository texts, ethnographies.

2. Text and Reflection

- Text structure, language, genre, context, socio-cultural diversity.
- Reflection in Reading: Pre-reading, Post-reading.
- Previews the text and make predictions, makes connections to personal experience or other texts, asks clarifying questions, identify difficult sentences or passages, restates in own words, reacts to the text by using language laboratory.

Unit 2

3. **Communicative Reader- Interactive reading (Individual and groups)**
   Concept and relevance of communicative reader.
4. **Expressive Reflections**
   a) Concept of reflective writing
   b) Critical appreciation of the text: Note taking, critically reviewing the text

INDEX

S. No.	Date	Lesson No.	Topic	Pages	Sign. of the Supervisor
			EPIC - I		
			UNIT - I		
1.		1.	Text and Reading.		
			Types of Text		
			(i) Literary or non-literary		
			(ii) Narrative		
			(iii) Expository		
			(iv) technical & persuasive		
2		2	Text and Reflection		
			(i) Text structures, language genre content, Socio-cultural diversity.		
			(ii) Pre-reading, post reading		
			(iii) Reviews the text and make predictions and language lab.		
			Unit - 2.		
3		3.	Communicative Reader.		
4.		4.	Expressive Reflection		
			(i) Concept of Reflective writing		
			(ii) Critical - Note taking, critically reviewing the text.		